REVIEWS OF LITERATURE
ISSN: 2347-2723
IMPACT FACTOR : 3.3754(UIF)
VOLUME - 5 | ISSUE - 7 | FEBRUARY - 2018

# विश्व पटल पर हिंदी की स्थिति और महत्व

पूनम

**सांराश**

हम सब कहते है की हिंदी हमारी मातृभाषा है और यह हमारी राष्ट्रभाषा है। हिंदी भाषा की उपादेयता इस बात से प्रामणित होती है कि यह भारत के बहुसंख्य लोगो की भाषा है, साहित्यकार और कवियों की भाषा है। हमारा जन्म जीवन कर्म हमारे देश भारत या हिंद्स्तान और हिंदी के आंचल में हुआ है। हमारे रगो में बहता हुआ खून हिंदुस्तान की मिट्टी और हिंदी की पहचान है। हमारी मननस्थिती हिंदी ही है।

आज खेद का विषय है की नई पीढ़ी का हिंदी भाषा के प्रति अन्राग कम और इंग्लिश भाषा के प्रति अन्राग बढ़ा हुआ पाया जा रहा है परन्त् उसके जिम्मेदार हम है क्योकि हर हिंद्स्तानी अपने बच्चे को इंग्लिश स्कूल में पढ़ाने की कामना रखता है ।जहाँ हिंदी भाषा गौण हो जाती है। अंग्रेजी कान्वेन्ट के पढ़े हुए लोग अंग्रेजी बोलने की अपनी क्षमता के कारण विद्धान शद्ध हिंदी बोलने वाले विद्धत जनो को अपने से कमतर आंकते है। आज के दौर में हिंदी की वर्तमान स्थिति आंकलन इस व्यवहारिकता के दयनीय व् सोचनीय स्थिति को परिपेक्ष में रखकर किया जा सकता है।

अंगेजी माध्यम से पढ़ता बच्चा समय से नहीं अपनी माता मातृभूमि की मिट्टी स्गंध व मातृभाषा हिंदी से द्र होने की प्रक्रिया में चला जाता है। हिन्दी में गिनती पहाड़े हिंदी वर्णमाला के अक्षर आज के छठी सातवीं कक्षा तक के बच्चों को भी बिलकुल नहीं आता। हर प्रबंद्ध हिंदस्तानी सोच सकता है कि आज हिंदी की स्थिति क्या हो गयी है।

वास्तव में अंग्रेजी को उच्चतर और हिन्दी को कमतर स्थिति में करने को हम सभी स्वयं जिम्मेदार है और भारतीय ही अपनी मातृभाषा हिंदी को दयनीय और सोचनीय स्थिति में जाने का जिम्मेदार है। भविष्य पर इसका दूरगामी असर होना तय है।

हमारी आने वाली पीढ़ी अनजाने ही अपनी मातृभाषा हिंदी से नहीं बल्कि अपनी प्राचीन संस्कार सभ्यता संस्कृति से द्र होती जा रही है। अपने बच्चो को भाषा को विस्तृत लिखना पढ़ना ज्ञान के साथ इंग्लिश का भी ज्ञान दे न कि इंग्लिश के साथ हिंदी का।

आज हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए आवश्यक है कि सरकार व हर भारतवासी हिंदी में बोले लिखे और सरकारी कार्यलयों में हिन्दी काज करे यहाँ तक की न्यायालय के फैसले भी हिंदी में हो। हम सभी हिंदी बोलते हुए गर्वन्भूति का एहसास करे ताकि अंग्रेजी बोलने वालो के सामने अपने की कमतर महसूस करे। हिंदी भाषा अन्तराष्ट्रीय भाषा बनाने का संकल्प ले।

अपनी मातृभाषा हिंदी को पूर्व प्राप्त प्रतिष्ठित स्थिति के उच्च आसान पर विराजमान करना हम सभी हिन्दस्तानियों का कर्तव्य है। कवि की निम्न पंक्तिया हदय में अवस्थित करना होगा। जिसको न निज भाषा तथा निज देश का अभिमान है। वह नर नहीं पश् निरा है और मातृक समान है।

आज हिंदी का महत्व काफी बाद गया है। हिन्दी सवैधानिक रूप से भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है।

भारत में अनेक राज्य है और उन सभी राज्यों को भी अलग -अलग भाषाएं है। इस प्रकार भारत एक बहुभाषी देश है। लेकिन उसकी अपनी

एक राष्ट्र भाषा है जो की 'हिन्दी' है। 14 सितंबर 1949 को हिन्दी भाषा भारत की राष्ट्रभाषा घोषित की गयी। 26 जनवरी 1950 को भारत का अपना सविधान बना। हिन्दी को राजभाषा का दर्ज दिया गया। यह माना कि धीरे धीरे हिन्दी अंग्रेज़ी का स्थान ले लेगी।

हिन्दी और उसकी बोलिया उत्तर एवं मध्य भारत के विविधि प्रांतो में बोली जाती है। भारत और विदेशो में करोड़ो लोग हिंदी बोलते है। फिजी, मॉरीशस, गयाना, सुरीनाम की अधिकतर जनता हिन्दी बोलती है।

हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्व भाषा बनाने की और अग्रसर है। भाषा विकास क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक की भव्यिवाणी हिंदी प्रेमीयों के लिए बड़ी सन्तोषजनक है कि आने वाली समय में विश्व स्तर पर परमुख होगी। हिन्दी भाषा का अध्ययन विश्व के कई विश्वविधालयो में किया जाता है।

यद्दिप हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी है फिर भी हम वार्तालाप करते समय अंग्रेज़ी शब्द का प्रयोग करते है।

## संदर्भ

1. विश्व पटल पर हिंदी, डॉ० मनीषा शर्मा
2. विश्व पटल पर हिंदी, सूर्यप्रसाद दीक्षित

पूनम